विशद
मौन एकादशी विधान

(प्रयोग व्रत विधान)

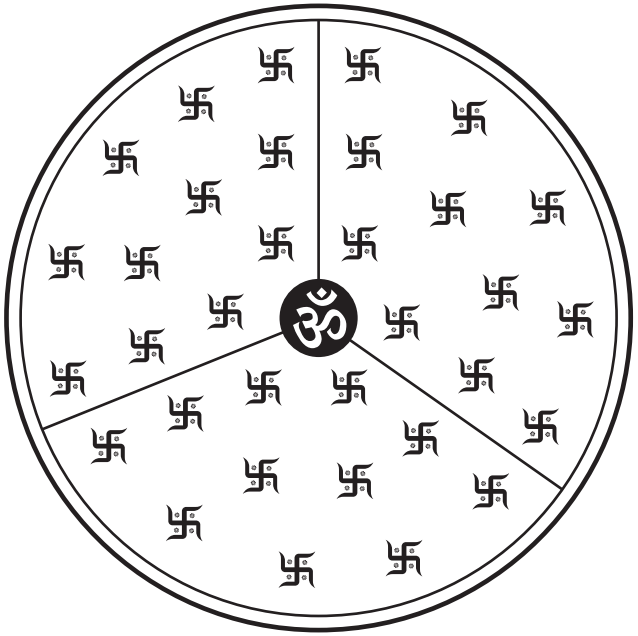

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

कृति – विशद मौन एकादशी विधान

रचयिता – प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज

संस्करण – प्रथम-2018, प्रतियाँ - 1000

सम्पादन . मुनि 108 श्री विशाल सागर जी महाराज

सहयोग – आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी
ऐलक श्री विदक्ष सागर जी, क्षुल्लक श्री विसौम सागर जी
क्षुल्लिका श्री वात्सल्य भारती माताजी, ब्र. प्रदीप भैया

संकलन – ज्योति दीदी-9829076085, आस्था दीदी
सपना दीदी-9829127533, आरती दीदी-8700876822

कम्पोजिंग – सपना दीदी-9829127533

प्राप्ति स्थल – 1. सुरेश जैन सेठी, शांति नगर, जयपुर - 9413336017
2. हरीश जैन, दिल्ली - 9136248971
3. महेन्द्र कुमार जैन, सैक्टर-3 रोहिणी - 09810570747
4. पदम जैन, रेवाड़ी - 09416888879
5. श्री सरस्वती पेपर स्टोर, चांदी की टकसाल, जयपुर
मो.: 8561023344, 8114417253

मुद्रक – बसन्त जैन, श्री सरस्वती प्रिन्टिंग इण्स्ट्रीज, (बही खाते के निर्माता) SBI के नीचे, चांदी की टकसाल, जयपुर -
मो.: 8114417253, 8561023344
ईमेल : jainbasant02@gmail.com

मूल्य – 25/- रु. मात्र

श्री मौन एकादशी व्रत कथा

मौन एकादशि व्रत किए, बने सुकौशल भूप।
संयम धारण कर ''विशद'', पाए निज स्वरूप।।

जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में कौशल्य देश है। उसमें यमुना नदी के तट पर कौशाम्बी नगर की नगरी है, उसी नगर में परमपूज्य छटवें तीर्थंकर श्री पद्मप्रभु का जन्म हुआ था। एक समय इसी नगर में हरिवाहन नाम का राजा और उसकी शशि प्रभा नाम की पट्टरानी थी ।

राजपुत्र का नाम सुकौशल था। यह राजकुमार सर्व विद्या और कलाओं में निपुण होने पर भी निरन्तर खेल-तमाशों आदि क्रियाओं में निमग्न रहता था और राजकाज की और बिल्कुल भी ध्यान ना देता था। इसलिए राजा को निरन्तर चिन्ता रहने लगी कि राजपुत्र राज कार्य में सहयोग नहीं देता है, तब भविष्य में कार्य कैसे चलेगा ?

एक समय भाग्योदय से सोमप्रभ नाम के महामुनिराज संघ सहित विहार करते हुए इसी नगर के उद्यान में पधारे। राजा ने वनमाली द्वारा ये शुभ समाचार सुनकर पुरवासियों सहित हर्षित होकर श्री गुरु के दर्शनों कें प्रयाण किया और वहाँ पहुँचकर भक्तिभाव से वंदना स्तुति करके धर्म श्रवण की इच्छा से नत मस्तक होकर बैठ गया।

श्रीगुरु ने प्रथम मिथ्यात्व के छुड़ाने वाले और संसार से भय उत्पन्न कराने वाले व्याख्यान सुनाया, मुनि और श्रावक के धर्म को पृथक् कर-करके समझाया और यह भी कहा कि मुनि परम्परा मोक्ष का कारण समझना चाहिए, यथार्थ में तो भव्य जीवों को मुनि धर्म ही पालन करना चाहिए। परन्तु यदि शक्तिहीनता के कारण एकादश मुनिधर्म न धारण कर सके, तो कम से कम व्रती श्रावक को धर्म ही धारण करे और निरन्तर अपने भावों को बढ़ाता और शरीरादि इन्द्रियों तथा मन को वश करता जावे तब ही अभीष्ट सुख को प्राप्त हो सकता है।

श्रावक धर्म केवल अभ्यास के लिए है इसलिए इसी में रजायमान होकर इति नहीं कर देना चाहिए किन्तु मुनिधर्म की भावना भाते हुए उसके लिए तत्पर रहना चाहिए।

राजा ने उपदेश सुनकर स्वशक्ति अनुसार व्रत धारण किया ओर विशेष बातों का श्रधाना किया। पश्चात अवसर देखकर पूछने लगे - हे नाथ! मेरा पुत्र विद्यादि में निपुण होने पर भी बाल क्रीडाओं में अनुरक्त रहता है। और राज भोग में कुछ भी नहीं समझता है अतः इसकी चिंता है कि भविष्य में राज्य स्थिति कैसे रहेगी।

राजा का प्रश्न सुनकर श्री गुरु ने कहा - इसी देश के कूट नामक नगर मैं राजा रणवीर सिंह उसकी पत्नी त्रिलोचना नाम की रानी थी। इसी नगर में एक कुणवी रहता था। उसकी पुत्री तुंगभद्रा थी। इस भाग्यहीन कन्या के पापोदय से शैशव अवस्था में ही माता-पिता आदि बंधु बांधव कालवश हो गये और वह अनाथनी अकेली कन्या अपने अन्य रिस्तों से वंचित हुई, जूठन पर गुजार करती ऐसे समय बिताने लगी।

जब वह आठ वर्ष की हुई, एक दिन घास काटने को वन में गई थी, वहां पिहिताश्रव मुनिराज के दर्शन हो गये। वह बालिका भी लोगों के साथ श्री गुरु को नमस्कार करके धर्म श्रवण करने लगी, परन्तु भूख की वेदना से व्याकुल हुई। इसके कुछ भी समझ में नहीं आता था, तब इस दुखित कन्या ने दुख कातर होकर पूछाँ - हे दयानिधान गुरुदेव! मैं जन्म से अनाथिनी अन्न वस्त्र का कष्ट पा रही हूं, इसलिए कृपाकर ऐसा उपाय बताईये कि जिससे मेरा दुःख दूर होवे।

तब श्री गुरु ने कहा - ये सब तेरे पूर्व पाप कर्म का फल है। अब तू श्री जिनेन्द्रदेव, निर्ग्रन्थ गुरु, दयामयी धर्म पर श्रद्धा करके भाव सहित मौन एकादशी व्रत का पालन कर, जिससे तेरे पाप का क्षय होवे और संसार का अंत आवे। सुन, इस व्रत की विधि इस प्रकार है-

पौष वदी एकादशी को सोलह प्रहर का उपवास कर और ये सोलह प्रहर जिनालय में धर्मकथा पूजाभिषेकादि धर्मध्यान में व्यतीत कर, तीनों काल सामायिक कर, सोलह प्रहर मौन से रह, अर्थात मुँह से न बोले, हाथ, नाक, आँख आदि से संकेत भी न करें।

इस प्रकार जब सोलह प्रहर हो जावें तव द्वादशी की दोपहर को पूजाभिषेक करके सामायिक या स्वाध्याय करे और फिर अथिति मुनि, गृहत्यागी श्रावक या साधर्मी गृहस्थ व दीन दुखित भूखित को भोजन कराकर आप पारणा करें। जो कोई व्रती पुरुष हो उनको नारियल या खारक, बादाम आदि बांटें। इस प्रकार ग्यारह वर्ष तक यह व्रत करके फिर उद्यापन करें और उद्यापन की शक्ति ना होवे तो दूना व्रत करें। उद्यापन विधि इस प्रकार है कि आवश्यकता होवे तो श्री जिन मंदिर बनवायें 24 भगवान की प्रतिमा की प्रतिष्ठा करके पधरावें। घण्टा, झालर चौकी चंदोवा, छत्र, चमर, शास्त्रादि 24-24 जिनालय में पधरावें। शास्त्र भंडार की स्थापना करें, ग्रंथ वितरित करें, विद्यार्थियों को भोजन करावें, यथाशक्ति आवश्यक संघ को आहार दान देवें।

नारियल आदि साधर्मियों को बांटें, महापूजा विधान करें, दुखी अपाहिजों को भोजन, वस्त्र औषधि आदि दान करें भयभीत जीवों को अभयदान देवे इत्यादि विधि सुन, उस दरिद्र कन्या ने भाव सहित पालन किया और अन्त समय

सन्यास सहित णमोकार मंत्र का स्मरण करते हुए शरीर छोड़कर तेरे घर यह पुत्र हुआ है। यह पुत्र चरम शरीरी है, इसी से राज्य भोग में इसका चित्त नहीं लगता हैं, यह बहुत थोड़ें समय घर में रहेगा।

राजा इस प्रकार श्री गुरु के मुख से अपने पुत्र का वृतांत सुनकर घर आया संसार, देह, भोगों से विरक्त होकर उसने अपने पुत्र का राज्य तिलक किया, पश्चात पिहिताश्रव आचार्य के पास दीक्षा ले ली। इसके साथ और भी बहुत से राजाओं ने दीक्षा ली और राजा सुकौशल राज्य करने लगा, सो वह अल्प संसारी राजनीति की कुटिलता को न जानता हुआ सुख पूर्वक कालक्षेप करने लगा एक समय मति सागर नामक भंडारी ने श्रुतसागर नामक मंत्री से मंत्रणा किया की राजा राजनीति से अनविज्ञ है, इसलिए इसे कैद करके मे तुम्हें राजा बना देता हूँ और मैं मंत्री होकर रहूगां, परन्तु ये वार्ता मतिसागर के पुत्र राजा के बालसखा द्वारा राजा के कान तक पहुंच गई, राजा ने मतिसागर को इस कुटिलता व धृष्टता के बदले अपमान सहित देश से निकाल दिया और श्रुतसागर को राज्यभार सौंप कर आप अपने पिता के पास गए और दीक्षा ले ली यह मतिसागर भंडारी (आर्त भावों से) मरण कर सिंह हुआ, सो विकराल रूप धारण किए अनेक जीवों का घात करता हुआ विचरता था कि उसी वन में वे हरिवाहन और सुकौशल स्वामी आ पहुंचे, सिंह ने इन्हें देखकर पूर्व बैर के कारण क्रोधित होकर इनके शरीर को विदीर्ण कर दिया, वे मुनिराज उपसर्ग जानकर निश्चल हो शुक्ल ध्यान को धारण कर आत्मा में निमग्न हो गए, तब सिंह भी उपशांत होकर वहां से चला गया वे और वे मुनि अंत:कृत होकर केवली होकर सिद्ध पद को प्राप्त हुए और सिंह मुनि हत्या के कारण मरकर नरक में घोर दु:ख भोगने चला गया। प्राणी नि:संदेह अपने ही द्वारा किए हुए शुभाशुभ कर्मों का फल सुख और दुख भोगा करते है।

प्राणी इस प्रकार एक दरिद्र कन्या ने भी मौन एकादशी व्रत श्रद्धा भक्ती पूर्वक पालन किया, जिसके फल से सुकौशल स्वामी होकर सकल कर्मों का क्षय कर सिद्ध पद को प्राप्त हुई, और जो कोई भव्य जीव श्रद्धा पूर्वक यह व्रत करेंगे, तो अवश्य ही उत्तमोउत्तम सुखों को प्राप्त करेंगे।

दोहा- ''एकादशि व्रत जो करे, वे पावें शिवराज।
अर्हत पदधारी 'विशद', तारण तरण जहाज।।''

ब्र. सपना दीदी
संघस्थ - प. पू. आचार्य विशद सागर जी महाराज

मौन एकादशी व्रत पूजा।। सुकौशल व्रत।।

स्थापना

मौन एकादशि व्रत है पावन, जिसको धारण करके जीव।
भाव सहित व्रत का पालन कर, प्राप्त करें जो पुण्य अतीव।।
श्री श्रेयांस जिनवर की अर्चा, करके पाएँ पुण्य निधान।
विशद हृदय में नाथ! आपका, भाव सहित करते आह्वान।।

दोहा - अर्चा करने आपकी, भक्त खड़े हैं द्वार।
चरणों वन्दन हम करें, नत हो बारम्बार।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य श्री जिनेन्द्र! अत्र अवतरावतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

।। चाल छन्द।।

भर कर लाए प्रासुक नीर, चरणों धार करें।
पा जाएं भव का तीर, तीनों रोग हरें।।
मौन एकादशि व्रतवान, होकर गुण गाते।
प्रभु जागे मम सौभाग्य, पद में सिर नाते।।1।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य श्री जिनेन्द्राय नम: जलं निर्वपामीति. स्वाहा।

चन्दन की परम सुवास, चारों दिश महके।
हो भव आताप विनाश, मन मेरा चहके।।
मौन एकादशि व्रत वान, होकर गुण गाते।
प्रभु जागे मम सौभाग्य, पद में सिर नाते।।2।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध श्री जिनेन्द्राय नम: चन्दनं निर्वपामीति. स्वाहा।

अक्षत ये धवल महान, धोकर के लाए।
पद अक्षय मिले प्रधान, अर्चा को आए।।
मौन एकादशि व्रत वान, होकर गुण गाते।
प्रभु जागे मम सौभाग्य, पद में सिर नाते।।3।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध श्री जिनेन्द्राय नम: अक्षतं निर्वपामीति. स्वाहा।

यह पुष्प लिए शुभकार, पावन गंध भरे।
हो काम रोग निरवार, मम आह्लाद भरे।।

मौन एकादशि व्रत वान, होकर गुण गाते।
प्रभु जागे मम सौभाग्य, पद में सिर नाते।।4।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध श्री जिनेन्द्राय नमः पुष्पं निर्वपामीति. स्वाहा।

नैवेद्य लिए रसदार, पूजा को लाए।
हो क्षुधा रोग परिहार, जिन महिमा गाए।।
मौन एकादशि व्रत वान, होकर गुण गाते।
प्रभु जागे मम सौभाग्य, पद में सिर नाते।।5।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध श्री जिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं निर्वपामीति. स्वाहा।

यह जला रहे शुभ दीप, मोह तिमिर नाशी।
अर्पित कर चरण समीप, होवें शिव वासी।।
मौन एकादशि व्रत वान, होकर गुण गाते।
प्रभु जागे मम सौभाग्य, पद में सिर नाते।।6।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध श्री जिनेन्द्राय नमः दीपं निर्वपामीति. स्वाहा।

यह धूप जलाएँ नाथ!, आठों कर्म नशें।
हम चरण झुकाएँ माथ, वसु गुण हृदय बसें।।
मौन एकादशि व्रत वान, होकर गुण गाते।
प्रभु जागे मम सौभाग्य, पद में सिर नाते।।7।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध श्री जिनेन्द्राय नमः धूपं निर्वपामीति. स्वाहा।

फल ताजे ले रसदार, पूज रहे स्वामी।
हम पाँए मुक्ती द्वार, बनें प्रभु शिवगामी।।
मौन एकादशि व्रत वान, होकर गुण गाते।
प्रभु जागे मम सौभाग्य, पद में सिर नाते।।8।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध श्री जिनेन्द्राय नमः फलं निर्वपामीति. स्वाहा।

आठों द्रव्यों का अर्घ्य, चढ़ा कर हर्षाएँ।
हम पा के सुपद अनर्घ्य, मोक्ष पदवी पाएँ।।
मौन एकादशि व्रत वान, होकर गुण गाते।
प्रभु जागे मम सौभाग्य, पद में सिर नाते।।9।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध श्री जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति. स्वाहा।

दोहा - नीर भराया कूप से, देने शांती धार।
शांती पाएँ हम विशद, वन्दन बारम्बार।।

।। शान्तये शान्तिधारा ।।

दोहा - उपवन के यह पुष्प ले, अर्चा करते देव!।
जब तक मुक्ती ना मिले, ध्यायें तुम्हें सदैव।।

।। पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

जयमाला

दोहा - मौन एकादशि व्रत करें, जग में जो भी जीव।
जयमाला गाएँ विशद, पावें पुण्य अतीव।।

।। शम्भू-छन्द ।।

जम्बू द्वीप के भरत क्षेत्र में, कौशल देश हैं महति महान।
कौशाम्बी नगरी है पावन, पद्म प्रभु का जन्म स्थान।।1।।
हरि वाहन नृप शशि प्रभा का, पुत्र सुकौशल विद्यावान।
क्रीड़ा में रत रहता था जो, राज्य पे ना देता था ध्यान।।2।।
मुनि सोमप्रभ से राजा ने, पुत्र का पूछा भूत भविष्य।
तव मुनिवर ने कहा भूप से, हो एकाग्र सुनो हे शिष्य!।।3।।
रणवीर सिंह रानी त्रिलोचना, की पुत्री तुंगभद्रा नाम।
थी अनाथनी पिहिताश्रव मुनि, के पद जाके किया प्रणाम।।4।।
पौष वदी एकादशि का व्रत, सोलह पहर का करो विशेष।
उभय लोक में पुण्योदय से, जीवन सुखमय बने अशेष।।5।।
राजा को वैराग्य हुआ सुन, दिया सुकौशल को साम्राज्य।
हो अनभिज्ञ राजनीति से, हो विरक्त जो कीन्हें राज्य।।6।।
मतिसागर भण्डारी ने छल, किया राज्य में जब इक बार।
दिया निकाला राज्य से नृप ने, फिरा भटकता बारम्बार।।7।।
मरकर शेर हुआ भण्डारी, वन में करने लगा शिकार।
नृपति सुकौशल दीक्षा धारे, वन-वन करने लगे विहार।।8।।
क्रूर सिंह ने मुनि को देखा, निर्दय होके कीन्हा वार।
मर के नरक गति को पाया, पाया उसने दुःख अपार।।9।।
तन विदीर्ण हो गया मुनी का, किन्तु किए मुनि स्थिर ध्यान।
अन्तः कृत केवल ज्ञानी हो, प्राप्त किए जो पद निर्वाण।।10।।

दोहा - मौन एकादशि व्रत किया, तुंग भद्रा ने खास।
जिसके फल से राज्य अरु, पाया शिवपुर वास।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध श्री जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - महिमा व्रत की अगम है, जान सके तो जान।
'विशद' मोक्ष पद पाएगा, रखना यह श्रद्धान।।

इत्याशीर्वादः

समुच्चय त्रैलोक्य जिनालय पूजा

स्थापना

आठ कोटि छप्पन लख जानो, सहस सत्यानवे चार सौ मानो।
और इक्यासी जिनगृह गाए, अकृत्रिम शास्वत बतलाए।।
जिनमें हैं जिनवर प्रतिमाएं, वीतरागता जो दर्शाएँ।
आह्वानन कर पूज रचाते, जिन पद सादर शीश झुकाते।।

दोहा - मौन एकादशी व्रत रहा, अतिशयकार विधान।
जिनकी अर्चा कर यहां, करते जिन गुणगान।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य त्रैलोक्य जिनालय स्थित सर्व जिन बिम्ब समूह! अत्र अवतरावतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(वीर छन्द)

निर्मल जल की त्रय धारा दे, जन्म जरादिक हरण करें।
सम्यक् रत्नत्रय विभूति पा, मोक्ष मार्ग को ग्रहण करें।।
तीन लोक के शास्वत जिनगृह, जिन प्रतिमाएँ रही महान।
यहाँ बैठकर हम परोक्ष ही, करते है जिनका गुणगान।। 1।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य त्रैलोक्य जिनालय स्थित सर्व जिन बिम्बेभ्यो नमः जलं निर्वपामीति. स्वाहा।

शीतल चन्दन अर्पित करके, भव आताप विनाश करें।
जिनवाणी के द्वारा उर में, सम्यक् ज्ञान प्रकाश करें।।
तीन लोक के शास्वत जिनगृह, जिन प्रतिमाएँ रही महान।
यहाँ बैठकर हम परोक्ष ही, करते है जिनका गुणगान।। 2।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य त्रैलोक्य जिनालय स्थित सर्व जिन बिम्बेभ्यो नमः चन्दनं निर्वपामीति. स्वाहा।

धवल सुअक्षत से पूजा कर, अक्षय पद को ग्रहण करें।
काल अनादी भ्रमण मैटकर, निज स्वरूप में रमण करें।।
तीन लोक के शास्वत जिनगृह, जिन प्रतिमाएं रही महान।
यहां बैठकर हम परोक्ष ही, करते है जिनका गुणगान।। 3।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य त्रैलोक्य जिनालय स्थित सर्व जिन बिम्बेभ्यो नमः अक्षतं निर्वपामीति. स्वाहा।

सुरभित पुष्प चढ़ाकर अपने, काम रोग का नाश करें।
सिद्धसुपद को पाकर हम भी, सिद्ध शिला पर वास करें।।
तीन लोक के शास्वत जिनगृह, जिन प्रतिमाएं रही महान।
यहां बैठकर हम परोक्ष ही, करते है जिनका गुणगान।। 4।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य त्रैलोक्य जिनालय स्थित सर्व जिन बिम्बेभ्यो नमः पुष्पं निर्वपामीति. स्वाहा।

सरस शुद्ध नैवेद्य चढ़ाकर, क्षुधा व्याधि परिहार करें।
उत्तम संयम तप के द्वारा, चेतन का उपकार करें।।
तीन लोक के शास्वत जिनगृह, जिन प्रतिमाएं रही महान।
यहां बैठकर हम परोक्ष ही, करते है जिनका गुणगान।। 5।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य त्रैलोक्य जिनालय स्थित सर्व जिन बिम्बेभ्यो नमः नैवेद्यं निर्वपामीति. स्वाहा।

पावन घृत का दीप जलाकर, मोह महातम नाश करें।
निज घट में चैतन्य दीप का, मंगलमयी प्रकाश भरें।।
तीन लोक के शास्वत जिनगृह, जिन प्रतिमाएं रही महान।
यहां बैठकर हम परोक्ष ही, करते है जिनका गुणगान।। 6।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य त्रैलोक्य जिनालय स्थित सर्व जिन बिम्बेभ्यो नमः दीपं निर्वपामीति. स्वाहा।

शुद्ध स्वरूपाचरण धूप से, वसु कर्मों का हनन करें।
निज अनुभव रस पीकर निज के, विशद गुणों का मनन करें।।
तीन लोक के शास्वत जिनगृह, जिन प्रतिमाएं रही महान।
यहां बैठकर हम परोक्ष ही, करते हैं जिनका गुणगान।। 7।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य त्रैलोक्य जिनालय स्थित सर्व जिन बिम्बेभ्यो नमः धूपं निर्वपामीति. स्वाहा।

शुद्ध भाव के फल से स्वामी, पुण्य पाप का हरण करें।
परम मोक्ष पद पाने को अब, मोक्ष मार्ग को ग्रहण करें।।
तीन लोक के शास्वत जिनगृह, जिन प्रतिमाएं रही महान।
यहां बैठकर हम परोक्ष ही, करते हैं जिनका गुणगान।।8।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य त्रैलोक्य जिनालय स्थित सर्व जिन बिम्बेभ्यो नमः
फलं निर्वपामीति. स्वाहा।

वसु विधि अर्घ्य चढ़ाकर प्रभु जी, शास्वत पद में वास करें।
अष्ट गुणों की सिद्धी करके, केवल ज्ञान प्रकाश करें।।
तीन लोक के शास्वत जिनगृह, जिन प्रतिमाएं रही महान।
यहां बैठकर हम परोक्ष ही, करते हैं जिनका गुणगान।।9।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य त्रैलोक्य जिनालय स्थित सर्व जिन बिम्बेभ्यो नमः
अर्घ्यं निर्वपामीति. स्वाहा।

दोहा - जिनगृह जिनवर के चरण, वन्दन बारम्बार।
शांतीधारा दे रहे, करें आत्म उद्धार।।
(शान्तये शांतिधारा)

दोहा - मिथ्यातम का नाश कर, पाएँ ज्ञान प्रकाश।
पुष्पांजलि करते विशद, पाने शिवपुर वास।।
।। दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत ।।

जयमाला

दोहा - शास्वत हैं त्रय लोक में, अकृत्रिम जिनधाम।
जयमाला गाते यहाँ, पाने शिव सोपान।।
।। चौबोला छन्द।।

तीर्थंकर जिन केवल ज्ञानी, तीन लोक में पूज्य महान।
सुर नर मुनि गण भक्ति भाव से, करते हैं जिनका गुणगान।।
जिन प्रतिमाएँ वीतराग मय, इच्छितफल दायक शुभकार।
जिनगृह शास्वत पूज्य कहे हैं, भवि जीवों को मंगलकार।।1।।
जय-जय भवनवासि के जिनगृह, अधोलोक में आभावान।
सप्त कोटि अरु लाख बहत्तर, शाश्वत हैं अति महिमावान।।
चार सौ अट्ठावन श्री जिनगृह, मध्य लोक में गाये हैं।
अकृत्रिम मणिमय जिन मंदिर, अतिशय शोभा पाए हैं।।2।।

पंच मेरु के अस्सी जिनगृह, शोभा पाते अपरम्पार।
जम्बू शाल्मलि तरु की शाखा, पर शोभित हैं अतिशयकार।।
तीस कुलाचल ढ़ाई द्वीप में, जिन पर पावन श्री जिनधाम।
बीस कहे गजदन्तों पर शुभ, जिनपद सुर नर करें प्रणाम।।3।।
गिरि वक्षार के अस्सी जिनगृह, पूजें आके देव सुरेन्द्र।
एक सौ सत्तर विजयार्धों के, जिनगृह पूजें इन्द्र नरेन्द्र।।
द्वीप धातकी पुष्करार्ध में, उत्तर दक्षिण इस्वाकार।
जिनके ऊपर हैं अकृत्रिम, मंगलमय श्री जिनगृह चार।।4।।
मानुषोत्तर गिरि के ऊपर भी, जिनगृह शोभा पावें चार।
बावन जिनगृह नन्दीश्वर में, पूज्य बताए मंगलकार।।
कुण्डल गिरि पर चार जिनालय, शोभा पाते चारों ओर।
रुचक सु गिरि के भी शुभकारी, करते मन को भाव विभोर।।5।।
संख्यातीत जिनालय सोहें, व्यतंर देवों के स्थान।
भवन भवनपुर आवासों में, जिनगृह गाये सौख्य निधान।।
नीचे भूत जाति के देवों, में जिनगृह चौदह हज्जार।
सोलह सहस देव राक्षस के, तल में गाये अपरम्पार।।6।।
शेष सभी व्यन्तर देवों, के भवन नहीं हैं हैं पुरवास।
मध्य लोक में व्यंतर देवों, के त्रय विधि गाये आवास।।
अथवा किन्नर आदि सप्त विध, अधो में व्यन्तर के स्थान।
असंख्यात जिन भवन कहे हैं, रत्न प्रभा खर भाग में जान।।7।।
राक्षसेन्द्र के पंक भाग में, लाख असंख्य नगर विख्यात।
सब में जिन मंदिर में सुरगण, करें भक्ति की नित बरसात।।
मध्य लोक में द्वीप अचल तरु, सागर में इनके स्थान।
देश नगर घर नदी जलाशय, वन उपवन में रहे महान।।8।।
जल थल नभ में ये व्यन्तर सब, जहाँ कहीं भी करें निवास।
पूजें श्री जिन के जिनगृह जो, उनकी होती पूरी आस।।
सूर्य चन्द्र नक्षत्र ग्रहों अरु, ताराओं में श्री जिनधाम।
मध्य लोक की चतुर्दिशा में, शोभित होते ज्योर्तिमान।।9।।
ऊर्ध्व लोक में लाख चुरासी, सत्तानवे हज्जार प्रमाण।
देवों द्वारा पूज्य बताए, शास्वत गुण रत्नों की खान।।
आठ कोटि अरु लाख सुछप्पन, सहस सत्तानवे अरु सौ चार।
इक्यासी जिनगृह हैं पावन, आगम में गाया विस्तार।।10।।

सब जिनगृह में जिनप्रतिमाएं, नो सौ पच्चिसकोटि प्रमाण।
त्रेपन लाख सहस सत्ताइस, नौ सौ अड़तालिस शुभ जान।।
लाख पैतालिस योजन विस्तृत, सिद्ध शिला है अपरम्पार।
'विशद' सिद्ध पद पाने को हम, पूज रहे सब बारम्बार।। 11।।

दोहा - जिन बिम्बों को पूजकर, जागे सद् श्रद्धान।
कर्म नाशकर पूर्णतः, पाएँ पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य त्रैलोक्य जिनालय स्थित सर्व जिन बिम्ब समूहेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - पंच महाव्रत धारके, पाएँ पंचम ज्ञान।
रत्नत्रय निधि प्राप्त कर, मिलता मोक्ष निधान।।

अधोलोक भवनवासि जिनालय पूजन

स्थापना

भवन वासि देवों के गृह में, अकृत्रिम सोहें जिनधाम।
सप्त कोटि अरु लाख बहत्तर, जिनको करते देव प्रणाम।।
शाश्वत जिनगृह जिन प्रतिमाएँ, रत्नमयी हैं मंगलकार।
आह्वानन् करते हम उर में, करके वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य अधोलोक भवनवासि जिनालय स्थित सर्व जिन बिम्ब समूह! अत्र अवतरावतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(वीर छन्द)

कलश नीर के शुद्ध ताजे भराएँ, प्रभू के चरण तीन धारा कराएँ।
भवन वासियों के जिनालय में जाएँ, सभी देव जिन चरणों पूजा रचाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य अधोलोक भवनवासि जिनालय स्थित सर्व जिन बिम्ब समूहेभ्यो नमः जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

सुचन्दन में केसर घिसाकर कटोरी, चरण में चढ़ाएं कटे कर्म डोरी।
भवन वासियों के जिनालय में जाएँ, सभी देव जिन चरणों पूजा रचाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य अधोलोक भवनवासि जिनालय स्थित सर्व जिन बिम्ब समूहेभ्यो नमः संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्व.स्वाहा।

धुले स्वच्छ अक्षत धवल ये चढ़ाएँ, सुपद श्रेष्ठ शाश्वत प्रभू शीघ्र पाएँ।
भवन वासियों के जिनालय में जाएँ, सभी देव जिन चरणों पूजा रचाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य अधोलोक भवनवासि जिनालय स्थित सर्व जिन बिम्ब समूहेभ्यो नमः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्व. स्वाहा।

फूलों की चारों दिश सौगन्ध आये, लगा कर्म का रोग मेरा शीघ्र जाये।
भवन वासियों के जिनालय में जाएँ, सभी देव जिन चरणों पूजा रचाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य अधोलोक भवनवासि जिनालय स्थित सर्व जिन बिम्ब समूहेभ्यो नमः कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

सरस सद्य नैवेद्य के थाल लाए, मिले पूर्ण तृप्ती प्रभू पद चढ़ाए।
भवन वासियों के जिनालय में जाएँ, सभी देव जिन चरणों पूजा रचाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य अधोलोक भवनवासि जिनालय स्थित सर्व जिन बिम्ब समूहेभ्यो नमः क्षुधारोग विनाशरोग नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

शिखा दीप की बाह्य का अंध नाशे, करें आरती ज्ञान ज्योती प्रकाशे।
भवन वासियों के जिनालय में जाएँ, सभी देव जिन चरणों पूजा रचाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य अधोलोक भवनवासि जिनालय स्थित सर्व जिन बिम्ब समूहेभ्यो नमः मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

सुरभि धूप ताजी दशांगी बनाए, नशें कर्म सारे चरण नाथ! आए।
भवन वासियों के जिनालय में जाएँ, सभी देव जिन चरणों पूजा रचाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य अधोलोक भवनवासि जिनालय स्थित सर्व जिन बिम्ब समूहेभ्यो नमः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फलों से यहां भक्त पूजा रचाए, शाश्वत सुफल मोक्ष वह भक्त पाए।
भवन वासियों के जिनालय में जाएँ, सभी देव जिन चरणों पूजा रचाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य अधोलोक भवनवासि जिनालय स्थित सर्व जिन बिम्ब समूहेभ्यो नमः मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

भरें थाल में अर्घ्य लेके चढ़ाएँ, सुपद मोक्ष पाएँ नहीं लौट आए।
भवन वासियों के जिनालय में जाएँ, सभी देव जिन चरणों पूजा रचाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य अधोलोक भवनवासि जिनालय स्थित सर्व जिन बिम्ब समूहेभ्यो नमः अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अर्घ्यावली

दोहा - भवन वासि दश विधि कहे, व्यन्तर के भी देव।
रहे जिनालय इन गृहों, पूजें सभी सदैव।।

।। अथ प्रथम कोष्ठोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत।।

असुर कुमार देवों के चौंसठ, लाख सु जिनगृह गाए।
एक सौ आठ बिम्ब प्रति जिनगृह, में पावन बतलाए।।
जिनकी अर्चा करके प्राणी, अतिशय पुण्य कमाते।
उभय लोक सुख पाकर के वे, मोक्ष महापद पाते।।1।।

ॐ ह्रीं असुरकुमारदेव भवन स्थितचतु:षष्टिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नाग कुमारों के चौरासी, लाख जिनालय जानो।
रत्नमयी अकृत्रिम शास्वत, जिन बिम्बों युत मानो।।
जिनकी अर्चा करके प्राणी, अतिशय पुण्य कमाते।
उभय लोक सुख पाकर के वे, मोक्ष महापद पाते।।2।।

ॐ ह्रीं नागकुमारदेव भवन स्थितचतुरशीतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

देव सुपर्ण कुमारों के गृह, लाख बहत्तर भाई।
जिनगृह में जिनबिम्ब मनोहर, सोहें अति सुखदायी।
जिनकी अर्चा करके प्राणी, अतिशय पुण्य कमाते।
उभय लोक सुख पाकर के वे, मोक्ष महापद पाते।।3।।

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारदेव भवन स्थितद्वासप्ततिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दीप कुमारों के जिनगृह शुभ, लाख छियत्तर गाए।
रत्नमयी जिनबिम्बों युत जो, अकृत्रिम बतलाए।।
जिनकी अर्चा करके प्राणी, अतिशय पुण्य कमाते।
उभय लोक सुख पाकर के वे, मोक्ष महापद पाते।।4।।

ॐ ह्रीं दीपकुमारदेव भवन स्थितपट्सप्तमिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिनगृह उदधि कुमारों के हैं, लाख छियत्तरभाई।
उनमें जिन बिम्बों की अर्चा, है त्रिलोक सुखदायी।।
जिनकी अर्चा करके प्राणी, अतिशय पुण्य कमाते।
उभय लोक सुख पाकर के वे, मोक्ष महापद पाते।।5।।

ॐ ह्रीं उदधिकुमारदेव भवन स्थितचतुषष्टिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

देव स्तनित के भवनों में, लाख छियत्तर सारे।
जिनगृह हैं जिनबिम्बों संयुत, जो हैं पूज्य हमारे।।
जिनकी अर्चा करके प्राणी, अतिशय पुण्य कमाते।
उभय लोक सुख पाकर के वे, मोक्ष महापद पाते।।6।।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारदेव भवन स्थितषट्सप्ततिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

विद्युत कुमार देवों के जिनगृह, लाख छियत्तर सोहें।
रत्नमयी प्रतिमाएं जिनमें, जग जन का मन मोहें।।
जिनकी अर्चा करके प्राणी, अतिशय पुण्य कमाते।
उभय लोक के सुख पाकर वे, मोक्ष महापद पाते।।7।।

ॐ ह्रीं द्युितकुमारदेव भवन स्थितषट्सप्ततिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दिक्कुमार देवों के जिनगृह, लाख छियत्तर जानो।
हैं जिनबिम्ब अकृत्रिम जिनमें, जगत पूज्य हैं मानो।।
जिनकी अर्चा करके प्राणी, अतिशय पुण्य कमाते।
उभय लोक के सुख पाकर वे, मोक्ष महापद पाते।।8।।

ॐ ह्रीं दिक्कुमारदेव भवन स्थितषट्सप्ततिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अग्नि कुमार देव के छियत्तर, लाख जिनालय जानो।
हैं जिनबिम्ब अकृत्रिम जिनमें, जगत पूज्य हैं मानो।।
जिनकी अर्चा करके प्राणी, अतिशय पुण्य कमाते।
उभय लोक के सुख पाकर वे, मोक्ष महापद पाते।।9।।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेव भवन स्थितषट्सप्ततिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वायु कुमार देव के जिनगृह, लाख छियानवे गाए।
हम परोक्ष जिनगृह प्रतिमाओं, की अर्चा को आए।।
जिनकी अर्चा करके प्राणी, अतिशय पुण्य कमाते।
उभय लोक के सुख पाकर वे, मोक्ष महापद पाते।।10।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारदेव भवन स्थितषट्नवतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

सप्त कोटि अरु लाख बहत्तर अधोलोक में हैं जिनधाम।
एक सौ आठ-आठ प्रतिमाएँ, प्रति जिनगृह में हैं अभिराम।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते भाव विभोर।
विशद भावना यही हमारी, हम भी बढ़ें मोक्ष की ओर।।11।।

ॐ ह्रीं भवनवासि भवन स्थितसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्ष जिनालयेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

आठ सौ तैंतिस कोटि छियत्तर, लाख रहीं जिन प्रतिमाएँ।
अधोलोक में रत्नमयी शुभ, जिनके हम भी गुण गाएँ।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते भाव विभोर।
विशद भावना यही हमारी, हम भी बढ़ें मोक्ष की ओर।। 12।।

ॐ ह्रीं अधोलोके भवनालयस्थितजिनालयस्थ अष्ट सतत्रयत्रिंशतकोटि षट् सप्ततिलक्ष जिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

व्यन्तर देवों के जिनालय का अर्घ्य

अष्ट भेद व्यतर देवों के, जिनके भवन हैं संख्यातीत।
अकृत्रिम जिनगृह हैं उनमें, रत्नमयी जो उपमातीत।।
एक सौ आठ-आठ प्रतिमाएँ, प्रति जिनगृह में आभावान।
जिनकी अर्चा भक्ति भाव से, करते हैं हम महति महान।।

ॐ ह्रीं अधोलोके व्यन्तरदेवजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा - अधोलोक में शोभते, शास्वत श्री जिनधाम।
जिनकी हम जयमाल कर, करते विशद प्रणाम।।

।। नरेन्द्र छन्द।।

शास्वत भवन भवनवासी के, और जिनालय गाये।
सात कोटि अरु लाख बहत्तर, जिन मंदिर बतलाये।।
असुर कुमार देव के चौंसठ, लाख भवन मनहारी।
नाग कुमार के लाख चौरासी, भवन कहे शुभकारी।।1।।
उदधि स्तनित विद्युतादि अरु, अग्नि कुमार के जानो।
लाख छियत्तर शुभ प्रतीन्द्र के, भवन श्रेष्ठ पहिचानो।।
लाख छियानवे वायु कुमार के, उनके मध्य में जानो।
जिनके सु गृह जिनगृह अनुपम, अकृत्रिम पहिचानो।।2।।
रत्नप्रभा पृथ्वी के भाई, तीन भाग बतलाए।
भवनवासि के भवन पंक अरु, खर पृथ्वी में गाए।।
नाग कुमार आदि नव सुर तो, खर पृथ्वी के वासी।
पंक भाग में असुर कुमार सुर, रहे सर्वसुख रासी।।3।।

त्रय प्रकार स्थल किन ही के, भवन पुर त्रय जानो।
समचतुष्क शुभ भवन असुर के, बनें हुए हैं मानो।।
तीन शतक योजन ऊँचाई, भवनों की शुभ गाई।
संख्यात योजन विस्तृत हैं जो, संख्यातों लम्बाई।।4।।
महाकूट सौ योजन ऊँचे, वेदी बीच रहे हैं।
कूटों पर जिन भवन रत्नमय, गोपुर युक्त कहे हैं।।
चित्र मण्डपादिक हैं अनुपम, स्वाध्याय भवन बने हैं।
जिन मंदिर में देवच्छंद भी, सुन्दर रम्य घने हैं।।5।।
एक सौ आठ बिम्ब पद्मासन, प्रति मंदिर में जानो।
श्री देवी श्रुत देवी प्रतिमा, उभय पार्श्व हैं मानो।।
सर्वाण्ह यक्ष अरु सनत कुमार भी, आर्श्व पार्श्व में सोहें।
चामरादि मंगल द्रव्य इक सौ, आठ-आठ मन मोहें।।6।।
प्रतिबिम्बों के उभय पार्श्व में, नाग यक्ष शुभकारी।
चँवर ढोरते हैं मंगलमय, भविजन के मनहारी।।
सम्यग्दृष्टी देव भक्ति से, पूजा करते भाई।
मिथ्यात्वी कुलदेव भक्ति से, पूजें नित सुखदायी।।7।।
अष्ट द्रव्य के थाल सजाकर, अनुपम वाद्य बजावें।
पढ़ते हैं स्तोत्र पाठ शुभ, नाचत गावत आवें।।
जिनबिम्बों की 'विशद' वन्दना, कर सौभाग्य जगावें।
भव सिन्धू से मुक्ती पाकर, शिवपुर धाम बनावें।।8।।

दोहा - महिमा श्री जिन बिम्ब की, जग में रही महान।
शिवसुख पाने के लिए, करते हम गुणगान।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य अधोलोक भवनवासि जिनालय स्थित सर्व बिम्ब समूहेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - श्रद्धा भक्ती भाव से, पूजा करें विधान।
'विशद' ज्ञान पाके सभी, पावें मोक्ष निधान।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

मध्यलोक जिनालय पूजा

स्थापना

मध्यलोक के तेरह द्वीपों, में अकृत्रिम श्रीजिन धाम।
रत्नमयी जिन बिम्बों संयुत, सुरनर जिनको करें प्रणाम।।

प्रासुक अष्ट द्रव्य से जिनकी, अर्चा होती है गुणगान।
भक्ति भाव से विशद हृदय में, करते हैं हम भी आह्वान।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य मध्यलोक जिनालय स्थित जिन बिम्ब समूह! अत्र अवतरावतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

।। मत्वयंद छन्द ।।

क्षीर सिन्धु सा नीर कलश में, गालन करके गर्म कराए।
जन्म जरा मृत्यू विनाश के, हेतु श्री जिन चरण चढ़ाए।।1।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य मध्यलोक जिनालय स्थित सर्वजिन बिम्ब समूहेभ्यो नमः जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

गंध सुगंध सुकेसर संग, मलयगिरि चन्दन में घिसवाए।
भव संताप विनाश हेतु यह, श्री जिनराज के चरण चढ़ाए।।2।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य मध्यलोक जिनालय स्थित सर्वजिन बिम्ब समूहेभ्यो नमः संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्व.स्वा.।

तन्दुल श्वेत सुवास मती के, अक्षत धोके पूज रचाएँ।
यह संसार असार विचार, सुसंयम धर अक्षय पद पाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य मध्यलोक जिनालय स्थित सर्वजिन बिम्ब समूहेभ्यो नमः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्व. स्वाहा।

चम्प चमेली नागरमोथ के, फूलों की शुभ माल बनाएँ।
काम कषाय का रोग अनादि, हे नाथ! चरण उसको विनशाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य मध्यलोक जिनालय स्थित सर्वजिन बिम्ब समूहेभ्यो नमः कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

शुद्ध सरस नैवेद्य बना, शुभ थाल भरा जिनपाद चढ़ाएँ।
काल अनादि क्षुधादि लगा, प्रभु पूजन कर वह रोग नशाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य मध्यलोक जिनालय स्थित सर्वजिन बिम्ब समूहेभ्यो नमः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

रत्नमयी शुभ दीप अहा ले, घृत की उसमें ज्योति जलाएँ।
मोह महा मिथ्यात्व घना, जिनराज चरण निज मोह हटाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य मध्यलोक जिनालय स्थित सर्वजिन बिम्ब समूहेभ्यो नमः मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

शुभ गंध सुगन्धित धूप दशांगी, अग्नी में खे गंध उड़ाएँ।
हैं कर्म आठ के ठाट बड़े, उन कर्मों के अब बन्ध नशाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य मध्यलोक जिनालय स्थित सर्वजिन बिम्ब समूहेभ्यो नमः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल सेव नारंगी सुदाड़िम आदि, सुरंग विरंगे थाल भराए।
हो मोक्ष महाफल प्राप्त हमें, हम सदियों से यह फल कई खाए।।8।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य मध्यलोक जिनालय स्थित सर्वजिन बिम्ब समूहेभ्यो नमः मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

नीर सुगंध सुअक्षत फल, नैवेद्य सुदीप सुधूप बनाएँ।
श्री फल लेकर अर्घ्य चढ़ा, हम पद अनर्घ्य शास्वत प्रगटाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य मध्यलोक जिनालय स्थित सर्वजिन बिम्ब समूहेभ्यो नमः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अर्घ्यावली

दोहा - अकृत्रिम जिनधाम के, एकादश स्थान।
भू वर्ती हम पूजते, करके उर आह्वान।।

।। अथ द्वितिय कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत ।।

।। शम्भू छन्द ।।

मध्यलोक के मध्य सुमेरू, पंच शोभते महति महान।
चार वनों में अस्सी जिनगृह, शोभित हैं जिनबिम्बोंवान।।
शास्वत जिनगृह जिन प्रतिमाओं, के पद वन्दन बारम्बार।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी पाने भव से पार।।1।।

ॐ ह्रीं मध्य लोके पंचमेरु स्थित अशीति जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वा.।

पंच मेरु गिरि की विदिशाओं, में गजदंत शोभते बीस।
पावन गजदंतों पे जिनगृह, जिनपद झुका रहे हम शीश।।
शास्वत जिनगृह जिन प्रतिमाओं, के पद वन्दन बारम्बार।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी पाने भव से पार।।2।।

ॐ ह्रीं मध्य लोके विंशतिगजदंत स्थित जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वा.।

देव कुरू उत्तर कुरु में हैं, शाल्मलि जम्बू वृक्ष महान।
जिनके चउ शाखाओं ऊपर, भी जिनगृह सोहें भगवान।।

शास्वत जिनगृह जिन प्रतिमाओं, के पद वन्दन बारम्बार।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी पाने भव से पार।।3।।

ॐ ह्रीं मध्य लोके जम्बू शाल्मलि तरु स्थित दश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं नि.स्व.।

ढाई द्वीप के पंच क्षेत्र में, रहे कुलाचल पावन तीस।
अकृत्रिम हैं जिनगृह जिन पर, जिनको वन्दन है धर शीश।।
शास्वत जिनगृह जिन प्रतिमाओं, के पद वन्दन बारम्बार।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी पाने भव से पार।।4।।

ॐ ह्रीं ढाई द्वीपस्थ षट् कुलाचल स्थित त्रिंशत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं नि.स्व.।

भरतैरावत अरु विदेह के, एक सौ सत्तर हैं स्थान।
हैं विजयार्ध मध्य में जिनके, जिनपर जिनगृह में भगवान।।
शास्वत जिनगृह जिन प्रतिमाओं, के पद वन्दन बारम्बार।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी पाने भव से पार।।5।।

ॐ ह्रीं मध्य लोके सप्तत्यधिक शत विजयार्धोपरि जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंच विदेहों के विदेह उप, एक सौ आठ हैं आभावान।
एक सौ साठ रहे रजताचल, जिन पर जिनगृह में भगवान।।
शास्वत जिनगृह जिन प्रतिमाओं, के पद वन्दन बारम्बार।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी पाने भव से पार।।6।।

ॐ ह्रीं पंच विदेहे रजचातलगिर्योपरि षष्ठ्यधिशतजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं नि.स्व.।

द्वीप धातकी पुष्करार्द्ध के, मध्य में दो-दो इष्वाकार।
क्षेत्रों का जो करें विभाजन, जिनपर जिनगृह मंगलकार।।
शास्वत जिनगृह जिन प्रतिमाओं, के पद वन्दन बारम्बार।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी पाने भव से पार।।7।।

ॐ ह्रीं मध्य लोके जम्बू शाल्मलि तरु स्थित चतु: जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पुष्कर द्वीप के मध्य गोल है, मानुषोत्तर गिरि उच्च विशेष।
जिसके ऊपर चार दिशाओं, में जिनगृह में रहे जिनेश।।
शास्वत जिनगृह जिन प्रतिमाओं, के पद वन्दन बारम्बार।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी पाने भव से पार।।8।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरगिर्योपरि चतु: जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नन्दीश्वर है द्वीप आठवाँ, जिसमें पावन हैं जिनधाम।
पूर्वादिक चारों ही दिश के, मध्य में अंजन गिरि है नाम।।
जिसके चारों दिश दधिमुख हैं, मध्य वापिकाओं में जान।
जिसके दोनों वाह्य कोंण में, रतिकर दो-दो पर जिनधाम।।
शास्वत जिनगृह जिन प्रतिमाओं, के पद वन्दन बारम्बार।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी पाने भव से पार।।9।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वर द्वीपे द्वयपंचाशत् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ग्यारहवां है द्वीप मनोहर, कुण्डलगिरि जिसमें मनहार।
चारों दिश में चार जिनालय, में जिनवर हैं मंगलकार।।
शास्वत जिनगृह जिन प्रतिमाओं, के पद वन्दन बारम्बार।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी पाने भव से पार।।10।।

ॐ ह्रीं कुण्डलगिर्योपरि चतु: जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्वीप रहा तेरहवाँ पावन, रुचक सुगिरि जिसमें अभिराम।
जिसकी चारों दिश में जिनवर, प्रतिमाओं युत हैं जिनधाम।।
शास्वत जिनगृह जिन प्रतिमाओं, के पद वन्दन बारम्बार।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिनकी पाने भव से पार।।11।।

ॐ ह्रीं रुचक गिर्योपरि चतु: जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

चार सौ अट्ठावन हैं पावन, मध्य लोक में श्री जिनधाम।
उनमें जो जिनबिम्ब विराजित, जिन पद मेरा विशद प्रणाम।।
जिन प्रतिमाएँ सात सौ छत्तिस, कम हैं पंचाशत हज्जार।
अकृत्रिम शास्वत है जिनपद, वन्दन मेरा बारम्बार।।12।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके अष्ट पंचादशाधिक चतु:शत जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा - मध्य लोक के चैत्य जिन, चैत्यालय शुभकार।
गाते हैं जयमाल हम, पावें भव से पार।।

।। आल्हा छंद।।

मध्य लोक में बने जिनालय, पावन अकृत्रिम मनहार।
चार सौ अट्ठावन रत्नों से, शोभित होते मंगलकार।।

कृत्रिम रहे जिनालय कइ इक, जिनका नहीं है कोई पार।
प्रातिहार्य से शोभित होते, शिखर बने जिन पर शुभकार।।1।।
स्वर्णमयी रत्नों से सज्जित, मंदिर दिखते आलीशान।
वीतराग मुद्रा के धारी, जिनमें सोहें जिन भगवान।।
अस्सी रहे जिनालय अनुपम, पंच मेरुओं में चउ ओर।
गजदन्तों में बीस जिनालय, करते मन को भाव विभोर।।2।।
पृथ्वी काय वृक्ष दश जानो, उन पर हैं चैत्यालय श्रेष्ठ।
अस्सी शुभ वक्षार सुगिरि पर, बने जिनालय जहाँ यथेष्ठ।।
हैं विजयार्ध एक सौ सत्तर ,मध्य लोक के मध्य महान।
तीस कुलाचल पर भी मंदिर, अकृत्रिम हैं आभावान।।3।।
इष्वाकार चार शुभ गाये, मध्य लोक के मध्य विशेष।
मानुषोत्तर की चतुर्दिशा में, चार जिनालय कहे जिनेश।।
नंदीश्वर है द्वीप आठवाँ, जिसकी शोभा अपरम्पार।
बावन हैं चैत्यालय जिसमें, जिनको वन्दन बारम्बार।।4।।
कुण्डल गिरि में श्रेष्ठ जिनालय, चतुर्दिशा में बने हैं चार।
दिव्य वाद्य गीतों की जिनमें, होती है अनुपम झंकार।।
सुगिरि रुचकवर में चैत्यालय, चतुर्दिशा में मंगलकार।
उनके आगे के द्वीपों में, चैत्यालय का नहीं विचार।।5।।
एक सौ आठ प्रति चैत्यालय, में शोभित होते भगवान।
भव्य जीव प्रभु के दर्शन कर, करते नित आतम का ध्यान।।
घंटा ध्वजा कंगूरें आदिक, शोभित होते हैं जिन गेह।
सम्यक् दृष्टी जीव अर्चना, पूजा करते निः संदेह।।6।।
घंटा झालर बजें नगाड़े, मानो करते जय जयकार।
देव स्वर्ग से आकर पूजा, मिलकर करते सपरिवार।।
ढ़ाई द्वीप में विद्याधर भी, जिनालयों में करते दर्श।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, मन में बहुत मनाते हर्ष।।7।।
कृत्रिम बने जिनालय जितने, उनकी महिमा का ना पार।
यथा योग्य क्षमता से श्रावक, करते जिनगृह का विस्तार।।
शिला धातु आदिक से निर्मित, स्थापित करते जिन बिम्ब।
भव्य जीव जिनके दर्शन कर, लखते हैं अपना प्रतिबिम्ब।।8।।

दोहा - मध्यलोक में चैत्य जिन, चैत्यालय शुभकार।
जिनकी करते वन्दना, पावें शिव का द्वार।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य मध्यलोक संबंधी चतु: शत अष्ट पंचाशत् जिनालय जिनबिम्बेभ्य: जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - चैत्यालय अरु चैत्य हैं, महिमा मयी महान।
पुष्पांजलि करके 'विशद', शीश झुकाते आन।।

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

श्री ऊर्ध्व लोक जिनालय पूजा

स्थापना

ऊर्ध्व लोक में वैमानिक सुर, के अकृत्रिम रहे विमान।
शाश्वत जिनगृह जिनमें पावन, जिनबिम्बों युत रहे महान्।।
वीतराग दर्शायक अनुपम, जिन अर्चा है मंगलकार।
जिनका आह्वान करते हम, विशद भाव से बारम्बार।।

दोहा - अर्चा के शुभ भाव से, करते जिन आह्वान।
मोक्ष मार्ग हमको मिले, हो जाए कल्याण।।

ॐ ह्रीं मौन एकादशि व्रताराध्य ऊर्ध्वलोक जिनालय स्थित सर्व जिनबिम्ब समूह! अत्र अवतरावतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

क्षीरोदधि सम निर्मल जल से, धारा देते हैं हम तीन।
जन्म जरा मृत्यू रोगों को, करने आए हैं हम क्षीण।।
ऊर्ध्व लोक में जिनगृह प्रतिमा, की पूजा करके शुभकार।
अशुभ कर्म का क्षय हो जाता, जीवन बनता मंगलकार।।1।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्व लोक जिनालय संबंधी जिनबिम्बेभ्य: जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

केसर चन्दन से घिसकर के, गंध बनाई अपरम्पार।
भव आताप नशाने का हम, उद्यम करते अपरम्पार।।
ऊर्ध्व लोक में जिनगृह प्रतिमा, की पूजा करके शुभकार।
अशुभ कर्म का क्षय हो जाता, जीवन बनता मंगलकार।।2।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्व लोक जिनालय संबंधी जिनबिम्बेभ्य: संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

परम सुगंधित अक्षय अक्षत, ध्वजा चढ़ाते हैं मनहार।
अक्षय पद पाने हम आए, सर्व जहाँ में विस्मयकार।।
ऊर्ध्व लोक में जिनगृह प्रतिमा, की पूजा करके शुभकार।
अशुभ कर्म का क्षय हो जाता, जीवन बनता मंगलकार।।3।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्व लोक जिनालय संबंधी जिनबिम्बेभ्य: अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्व.स्वा.।

कमल केतकी आदिक सुरभित, पुष्प चढ़ाते खुशबूदार।
काम बाण हो नाश हमारा, हो जाएँ हम भी अविकार।।
ऊर्ध्व लोक में जिनगृह प्रतिमा, की पूजा करके शुभकार।
अशुभ कर्म का क्षय हो जाता, जीवन बनता मंगलकार।।4।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्व लोक जिनालय संबंधी जिनबिम्बेभ्य: कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं नि.स्वा.।

शुभ ताजे नैवेद्य बनाकर, चढ़ा रहे हैं हम रसदार।
क्षुधा रोग हो नाश हमारा, पा जाएँ हम भव से पार।।
ऊर्ध्व लोक में जिनगृह प्रतिमा, की पूजा करके शुभकार।
अशुभ कर्म का क्षय हो जाता, जीवन बनता मंगलकार।।5।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्व लोक जिनालय संबंधी जिनबिम्बेभ्य: क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.स्व.।

जगमग दीप जलाकर लाए, यहाँ चढ़ाने को शुभकार।
मोह-तिमिर हो नाश हमारा, बन जाएँ हम भी अनगार।।
ऊर्ध्व लोक में जिनगृह प्रतिमा, की पूजा करके शुभकार।
अशुभ कर्म का क्षय हो जाता, जीवन बनता मंगलकार।।6।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्व लोक जिनालय संबंधी जिनबिम्बेभ्य: मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि.स्व.।

सुरभित धूप दशांगी में शुभ, खुशबू का न पारावार।
अग्नी में हम जला रहे हैं, कर्म नाश पाने शिव द्वार।।
ऊर्ध्व लोक में जिनगृह प्रतिमा, की पूजा करके शुभकार।
अशुभ कर्म का क्षय हो जाता, जीवन बनता मंगलकार।।7।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्व लोक जिनालय संबंधी जिनबिम्बेभ्य: अष्टकर्मदहना धूपं निर्व. स्वाहा।

श्रेष्ठ सरस फल यहाँ चढ़ाते, सेव संतरा आम अनार।
भव सिन्धू से मुक्ती पाएँ, मिले मोक्ष फल का उपहार।।
ऊर्ध्व लोक में जिनगृह प्रतिमा, की पूजा करके शुभकार।
अशुभ कर्म का क्षय हो जाता, जीवन बनता मंगलकार।।8।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्व लोक जिनालय संबंधी जिनबिम्बेभ्य: मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत आदिक से, अर्घ्य बनाया विविध प्रकार।
पद अनर्घ्य हो प्राप्त हमें अब, हो जाए आतम उद्धार।।
ऊर्ध्व लोक में जिनगृह प्रतिमा, की पूजा करके शुभकार।
अशुभ कर्म का क्षय हो जाता, जीवन बनता मंगलकार।।9।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्व लोक जिनालय संबंधी जिनबिम्बेभ्य: अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - परम सुगन्धित नीर से, करते शांती धार।
सुख-शांती आनन्द हो, शांती मिले अपार।।

।। शान्तये शांतिधारा ।।

दोहा - पुष्पांजलि करते विशद, लेकर पुष्प महान।
तव गुण पाने के लिए, करते हम गुणगान।।

।। पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

दोहा - अकृत्रिम जिन धाम के, हैं ग्यारह स्थान।
जिन पद पूजें ऊर्ध्व के, पाने पद निर्वाण।।

।। अथ तृतीय कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत।।

।। चौपाई।।

स्वर्ग प्रथम सौधर्म कहाए, बत्तिस लाख जिनालय गाए।
जिन प्रतिमाएँ उनमें भाई, एक सौ आठ-आठ शिवदायी।।
भाव सहित जिन महिमा गाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते।
अकृत्रिम शास्वत अविकारी, जिनके पद में ढोक हमारी।।1।।

ॐ ह्रीं सौधर्म स्वर्ग स्थित द्वा त्रिंशत लक्ष जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

स्वर्गैशान में जिनगृह जानो, अट्ठाइस लाख बताए मानो।
घंटा तोरण युत मनहारी, ध्वज फहराएँ मंगलकारी।।
भाव सहित जिन महिमा गाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते।
अकृत्रिम शास्वत अविकारी, जिनके पद में ढोक हमारी।।2।।

ॐ ह्रीं ईशान स्वर्ग स्थित अष्टाविंशति लक्ष जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तृतिय स्वर्ग में जिनगृह भाई, बारह लाख रहे शिवादायी।
जिनमें जिन प्रतिमाएँ सोहें, जिन मंदिर में शोभा पाएँ।।

भाव सहित जिन महिमा गाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते।
अकृत्रिम शास्वत अविकारी, जिनके पद में ढोक हमारी।।3।।

ॐ ह्रीं सानत कुमार स्थित द्वादश लक्ष जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चौथा स्वर्ग माहेन्द्र निराला, आठ लाख जिनगेहों वाला।
जिनमें जिन प्रतिमाएँ सोहें, भवि जीवों के मन को मोहें।।
भाव सहित जिन महिमा गाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते।
अकृत्रिम शास्वत अविकारी, जिनके पद में ढोक हमारी।।4।।

ॐ ह्रीं माहेन्द्रस्वर्ग स्थित अष्ट लक्ष जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ब्रह्म युगल में महिमा कारी, चार लाख जिनगृह शुभकारी।
रत्नमयी जिनवर प्रतिमाएँ, भवि जीवों को शिव दर्शाएँ।।
भाव सहित जिन महिमा गाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते।
अकृत्रिम शास्वत अविकारी, जिनके पद में ढोक हमारी।।5।।

ॐ ह्रीं ब्रहम युगल स्थित चतु: लक्ष जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

लान्तव युगल में रहे जिनालय, सहस पचास श्रेष्ठ हैं अक्षय।
जिन प्रतिमाएँ हैं अविकारी, प्रातिहार्य युत अतिशयकारी।।
भाव सहित जिन महिमा गाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते।
अकृत्रिम शास्वत अविकारी, जिनके पद में ढोक हमारी।।6।।

ॐ ह्रीं लान्तव युगल स्थित पंचाशत सहस्र जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो है अतिशय महिमाकारी, जिनमें प्रतिमाए अविकारी।
जिनगृह चालिस सहस बताए, शुक्र युगल में अतिशय गाए।।
भाव सहित जिन महिमा गाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते।
अकृत्रिम शास्वत अविकारी, जिनके पद में ढोक हमारी।।7।।

ॐ ह्रीं ब्रहम युगल स्थित चत्त्वारिशत् सहस्र जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

युगल सतार के जिनगृह ध्याएँ, छह हजार अति शोभा पाएँ।
जिनबिम्बों के दर्शन पाए, हर्ष हर्ष जिनके गुण गाएँ।।
भाव सहित जिन महिमा गाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते।
अकृत्रिम शास्वत अविकारी, जिनके पद में ढोक हमारी।।8।।

ॐ ह्रीं शतार युगलस्थित षट् सहस्र जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आनतादि चउ स्वर्ग में भाई, सात सौ जिनगृह मंगलदायी।
अतिशकारी जिन प्रतिमाएँ, जिन पद में हम शीश झुकाएँ।।

भाव सहित जिन महिमा गाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते।
अकृत्रिम शास्वत अविकारी, जिनके पद में ढोक हमारी।।9।।

ॐ ह्रीं आनतादि चउस्वर्ग स्थित सप्तशत् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ग्रैवेयक त्रय रूप बताया, अधोमध्य उपरिम कहलाया।
तीन सौ नौ जिनगृह मनहारी, जिनबिम्बों युत आभाकारी।।
भाव सहित जिन महिमा गाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते।
अकृत्रिम शास्वत अविकारी, जिनके पद में ढोक हमारी।।10।।

ॐ ह्रीं नव ग्रेवेयक स्थित नवाधिक त्रिशत् जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अनुदिश और अनुत्तर गाए, क्रमशः नौ अरु पाँच बताऐं।
चौदह जिनगृह को हम ध्यायें, जिनबिम्बों पद शीश झुकाऐं।।
भाव सहित जिन महिमा गाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते।
अकृत्रिम शास्वत अविकारी, जिनके पद में ढोक हमारी।।11।।

ॐ ह्रीं पंचानुत्तर नवानुदिश् स्थित चतुर्दश जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

जिनगृह लाख चुरासी गाए, सहस सत्यानवे तेइस बताए।
ऊर्ध्व लोक के जिनगृह भाई, जिनबिम्बों युत हैं शिवदायी।।
भाव सहित जिन महिमा गाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते।
अकृत्रिम शास्वत अविकारी, जिनके पद में ढोक हमारी।।12।।

ॐ ह्रीं चतुरशीति लक्षसप्त नवतिसहस्र त्रयोविशति ऊर्ध्व लोक स्थित जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कोटि इकानवे लाख छियत्तर, सहस अठत्तर अरु सौ चार।
अधिक चुरासी जिन प्रतिमाएँ, ऊर्ध्व लोक में मंगलकार।।
भाव सहित हम जिनकी अर्चा, करते होके भाव विभोर।
विशद ज्ञान को पाके हम भी, बढ़े शीघ्र शिवपुर की ओर।।13।।

ॐ ह्रीं एक नवति कोटि षट् सप्तति लक्ष अष्ट सप्तति सहस्र चऊ शत चतुराशीति ऊर्ध्व लोक लोकस्थित सर्व जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नौ सौ पच्चिस कोटी त्रेपन, लाख और सत्ताइस हजार।
नौ सौ अड़तालिस जिन प्रतिमा, तीन लोक की मंगलकार।।
भाव सहित हम जिनकी अर्चा, करते होके भाव विभोर।
विशद ज्ञान को पाके हम भी, बढ़े शीघ्र शिवपुर की ओर।।14।।

ॐ ह्रीं पंचविशत्यिधिक नवशत् कोटि त्रय पंचाशत् लक्ष सप्तविंशति सहस्र नवशत् अष्टचत्त्वारिशद् त्रिलोक स्थित अकृत्रिम जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

दोहा - जिनगृह तीनों लोक में, शास्वत रहे त्रिकाल।
भाव सहित जिनकी विशद, गाते हैं जयमाल।।

।। शम्भू -छन्द।।

कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालय, तीन लोक में मंगलकार।
जिनकी अर्चा पूजा करते, प्राणी नत हो बरम्बार।।
भवन वासि देवों के चित्रा, भू के नीचे भवन महान।
दश प्रकार के देव कहे जो, जिनगृह जिनके आभावान।। 1।।
सप्त कोटि अरु लाख बहत्तर, अधोलोक में हैं जिनधाम।
शाश्वत अकृत्रिम गाए जो, जिनको बारम्बार प्रणाम।।
रत्नमयी जिन प्रतिमाओं की, अर्चा करते हैं सब देव।
भक्ति भाव से अर्चा करके, पुण्यार्जन जो करें सदैव।। 2।।
मध्य लोक गिरि तरु शाखाओं, आदिक में श्री जिन के धाम।
चार सौ अट्ठावन हैं पावन, जिनको बारम्बार प्रणाम।।
ढाई द्वीप के अन्दर ऋषि मुनि, विद्याधर भी करें विहार।
देव भक्ति से आकर करते, जिन पद वन्दन बारम्बार।। 3।।
ऊर्ध्व लोक में लाख चुरासी, सहस्र सत्यानवे तेईस विमान।
जिनमें जिनगृह जिनबिम्बों युत, शोभित होते आभावान।।
व्यन्तर देवों के जिनगृह भी, बतलाए हैं संख्यातीत।
जिनकी अर्चा देव करें सब, करके अपना चित्त पुनीत।। 4।।
ज्योतिष देवों के विमान शुभ, मध्यलोक में अधर रहे।
संख्यातीत जिनालय जिनमें, तीन लोक में पूज्य कहे।।
जो प्रत्यक्ष परोक्ष वन्दना, करते विशद भाव के साथ।
अतिशय पुण्य सुनिधि पाकर वे, बनते मोक्ष सुनिधि के नाथ।। 5।।

दोहा - शास्वत जिनगृह बिम्बजिन, पूज रहे हम नाथ!।
भक्ति भाव से तुम चरण, झुका रहे हैं माथ।।

ॐ ह्रीं अधो मध्य ऊर्ध्व लोक जिनालय स्थित मौन एकादशि व्रताराध्य सर्व जिनबिम्ब समूहेभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - जिनगृह जिन त्रय लोक के, गाए पूज्य महान।
भाव सहित जिनकी 'विशद', करते हम गुणगान।।

इत्याशीर्वादः

प्रशस्ति

स्वस्ति श्री वी.नि. 2545 वि.सं. 2075 मासोत्तम मासे पौष मासे कृष्ण पक्षे बसन्त पंचमी आचार्य श्री विशदसागर 'आचार्य पद दिवस' अवसरे हरियाणा प्रांत अंर्तगत रेवाड़ी नगरे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कारगणे सेनगच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदिसागराचार्या जातास्तत् शिष्यः श्री महावीरकीर्ति आचार्या जातास्तत् शिष्य विमलसागराचार्या जातास्तत् शिष्यः भरतसागराचार्या विरागसागराचार्या ततशिष्यः श्री विशदसागराचार्य कर-कमले श्री मौन एकादशि व्रत विधान लिख्यते इति शुभं भूयात्।

आचार्य 108 श्री विशदसागर जी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर ले मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ ह्रूँ क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी यतिवरेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परमेष्ठी की आरती

अर्हत् सिद्धाचार्य हैं, उपाध्याय मुनिराज हैं।
परमेष्ठी जिन पांचो की शुभ, आरती गाते आज हैं।।टेक।।
प्रथम आरती अर्हंतों की, केवल ज्ञान के धारी जी-2।
अनन्त चतुष्टय पाने वाले, पावन हैं अविकारी जी-2।।
अर्हत् सिद्धाचार्य हैं.....।।1।।
अष्ट कर्म के नाशी पावन, सिद्ध प्रभु कहलाए जी-2।
सिद्ध शिला पर धाम बनाए, सुखानन्त जो पाए जी-2।।
अर्हत् सिद्धाचार्य हैं.....।।2।।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, होते पंचाचारी जी-2।
छत्तिस मूलगुणों को पाते, होते हैं अविकारी जी-2।।
अर्हत् सिद्धाचार्य हैं.....।।3।।
ग्यारह अंग पूर्व चौदह सब, पच्चिस गुण प्रगटाते हैं-2।
ज्ञान ध्यान तप रत मुनियों को, पावन ज्ञान सिखाते हैं-2।।
अर्हत् सिद्धाचार्य हैं.....।।4।।
विषयाशा के त्यागी मुनिवर, संगारम्भ से हीन रहे-2।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित्र धर, वीतराग जिन संत कहे-2।।
अर्हत् सिद्धाचार्य हैं.....।।5।।
अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु को ध्यायें जी-2।
'विशद' आरती करके पद में, सादर शीश झुकाएँ जी-2।।
अर्हत् सिद्धाचार्य हैं.....।।6।।

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....
ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....
सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....
जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....
धन्य है जीवन धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।